**ओ३म्**

**‘स्वामी सत्यपति जी को समाधि अवस्था में हुई कुछ अनुभूतियां’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ऋषि भक्त स्वामी सत्यपति जी महाराज ऋषि दयानन्द जी की वैदिक विचारधारा और पातंजल योग दर्शन के सफल साधक हैं। आपने दर्शन योग महाविद्यालय और वानप्रस्थ साधक आश्रम की रोजड़, गुजरात में स्थापना की है और अपने अनेक शिष्यों को दर्शनों का आचार्य बनाया है। दर्शन के अध्ययन सहित आपने उन्हें योगाभ्यास भी कराया है। आपके सभी शिष्य योग साधक हैं जिनमें साधना की दृष्टि से स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है जिसमें एक प्रमुख ग्रन्थ **‘बृहती ब्रह्ममेधा’** है। योग व ध्यान विषयक आपका एक ग्रन्थ योगदर्शनम् है जिसमें आपने योग सूत्रों की व्याख्यायें की हैं। आपके सभी ग्रन्थ पठनीय एवं उपयोगी हैं। विगत वर्ष फरवरी, 2016 में हमें वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में स्वामी जी के दर्शन व वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब हम वहां से उनका **‘योगदर्शनम्’** ग्रन्थ लाये थे। आज इसी ग्रन्थ से हम स्वामी जी की समाधि की अवस्था में हुई कुछ अनुभूतियों का उल्लेख कर रहे हैं जिससे पाठक लाभान्वित होंगे। स्वामी सत्यपति जी की समाधि अवस्था की अनुभूतियां निम्न हैं:

(1) जब समाधि प्राप्त होती है तब हमारे शरीर पर कुछ प्रभाव होते हैं। उन प्रभावों में से एक प्रभाव यह है कि साधक के मस्तक के मध्य भाग में एक विशेष दबाव अनुभव में आता है, मानों कि कोई वस्तु मस्तक में चिपका दी गई हो।

(2) दूसरा प्रभाव यह अनुभव में आता है कि समाधि अवस्था में साधक में शीत व उष्णता को सहने का विशेष सामथ्र्य उत्पन्न हो जाता है। उदाहरण के लिये साधक को समाधि की स्थिति से पूर्व यदि शीत से शरीर की रक्षा के लिये एक कुर्ता व कम्बल धारण करने पड़े थे तो उसी साधक को समाधि की स्थिति में अब इन शरीर रक्षक वस्त्रों के न धारण करने पर भी शीत बाधित नहीं करता है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि साधक को बर्फ से ढकने पर भी उसे शीत बाधित नहीं करेगा। एक सीमा तक ही सहनशक्ति में वृद्धि माननी चाहिये।

(3) इसी प्रकार से रुग्ण अवस्था में भी एक सीमा तक साधक को रोग बाधित नहीं करता।

(4) समाधि के प्राप्त होने पर साधक को यह मानसिक अनुभूति होती है कि मैं समस्त दुःखों, क्लेशों व बन्धनों से छूट गया हूं और संसार के अन्य समस्त प्राणी बन्धनों, क्लेशों से ग्रस्त हैं।

(5) बौद्धिक स्तर पर वह आकाशवत् अवस्था का अनुभव करता है अर्थात् उसे संसार की प्रलयवत् अवस्था दिखाई देती है। उस स्थिति में वह मृत्यु आदि समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

(6) इस अवस्था में संसार के समस्त पदार्थों का स्वामी ईश्वर को ही मानता है और अपने तथा समस्त प्राणियों के बने हुवे स्वस्वामी सम्बन्ध को समाप्त कर देता है। यह अवस्था उसे इतनी प्रिय और सुखप्रद लगती है कि संसार के समस्त सुखों को वह दुःखरुप देखता है। इस स्थिति व सुख को वह छोड़ना नहीं चाहता। इस स्थिति को छोड़कर के वह रात्रि में सोना नहीं चाहता परन्तु स्वास्थ्य रक्षा हेतु उसे रात्रि में सोना पड़ता है।

(7) ईश्वरप्रणिधान से युक्त इस बौद्धिक स्तर पर सम्पादित की गई प्रलयावस्था में सम्प्रज्ञात समाधि का प्रारम्भ हो जाता है। इस अवस्था में साधक को देहादि से पृथक अपने स्वरूप की अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। सम्प्रज्ञात समाधि का जैसे-जैसे उत्कर्ष होता चला जाता है वैसे-वैसे शरीर, इन्द्रियों, मनादि उपकरणों से पृथक, अपने स्वरूप की अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। धीरे धीरे अपने आत्मस्वरूप की अनुभूति में भी स्पष्टता बढ़ती चली जाती है अर्थात् साधक का अपने स्वरूप विषयक ज्ञान प्रवृद्धि को प्राप्त होता चला जाता है। साधक सम्प्रज्ञात समाधि की अन्तिम उत्कर्षता को प्राप्त करके भी पूर्णरूपेण सन्तुष्ट नहीं हो पाता है। क्योंकि अभी उसकी ईश्वर साक्षात्कार की अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पाई है।

(8) ईश्वर-साक्षात्कार के लिए वह परमात्मा, ओम् आदि शब्दों को लेकर बार बार ईश्वर नाम को जपता हुआ ईश्वर-प्रणिधान की ऊंची स्थिति को बना लेता है। जिस प्रकार से एक छोटा बालक अपनी माता के भीड़ में खो जाने पर उसकी प्राप्ति के लिये अत्यन्त लालायित होता है, उस समय उस बालक को अपनी माता के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह बार-बार माताजी, माताजी ....... ऐसा बोलता है। ऐसी स्थिति में ईश्वर उसको सुपात्र मानकर अपनी शरण में ले लेता है और उसको अपना विशिष्ट ज्ञान देकर अपने स्वरूप का साक्षात्कार करवा देता है। इस ईश्वर-साक्षात्कार की अवस्था में साधक को ईश्वर के विशिष्ट नित्य आनन्द तथा विशिष्ट ज्ञान की अनुभूति हाती है। इस अवस्था में सर्वव्यापक ईश्वर का साक्षात्कार ऐसे ही होता है जैसे कि लोहे के गोले में अग्नि सर्वव्यापक दिखाई देती है।

(9) साधक सब जीवों तथा लोक लोकान्तरों को ईश्वर में व्याप्य तथा ईश्वर को इनमें व्यापक प्रत्यक्षरूप में अनुभव करता है। और साधक यह अनुभव करता है कि मैंने जो पाना था सो पा लिया और जो जानना था वह जान लिया। अब इससे अतिरिक्त कुछ और पाने योग्य और जानने योग्य शेष नहीं रहा रहा।

 स्वामी सत्यपति जी की उपुर्यक्त अनुभूतियों के बाद हम ऋषि दयानन्द के दुर्लभ अनुभवों से युक्त ईश्वर साक्षात्कार विषयक पंक्तियां भी उनके ग्रन्थ **‘ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका’** से उद्धृत कर रहे हैं। वह लिखते हैं कि ‘जिस समय सब साधनों से परमेश्वर की उपासना करके उसमें प्रवेश किया चाहें, उस समय इस रीति से करें कि कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में, और उदर के ऊपर जो हृदय देश है, जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाशरूप एक स्थान है, और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर-भीतर एकरस होकर भर रहा है, वह आनन्दरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है।’ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का समस्त उपासना विषयक अध्याय सभी को अवश्य पढ़ना चाहिये। इसी में एक स्थान पर ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि ईश्वर के अनुग्रह का फल परिपक्व शुद्ध परम आनन्द से भरा हुआ और मोक्षसुख को प्राप्त करनेवाला है। उपासनावृति का महत्व बताते हुए ऋषि लिखते हैं कि यह उपासनावृत्ति सब क्लेशों को नाश करनेवाली और सब शान्ति आदि गुणों से पूर्ण है। इसी प्रकरण में ऋषि ने उपासनावृत्ति के अभ्यास के द्वारा आत्मा को परमात्मा से युक्त कर परमात्मा को अपने आत्मा में प्रकाशित करने की बात भी कहते हैं।

 स्वामी सत्यपति जी ने समाधि के अनुभवों को लेखबद्ध कर साधकों पर महान उपकार किया है। स्वामी दयानन्द जी के भी हमने कुछ वाक्य प्रस्तुत किये हैं। यह भी उनके आपने ज्ञान व अनुभवों पर ही आधारित हैं। आश्चर्य है कि उनके अपने ही अनुयायी इनसे कोई विशेष लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं करते। हम यह अनुभव करते हैं कि योग व उपासना के क्षेत्र में जो साधक जितना पुरुषार्थ करता है उसे उसके अनुरुप ही सफलता प्राप्त होती है। योग का अभ्यास वही व्यक्ति कर सकता है जो स्वावलम्बी होने के साथ सभी प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो। योगाभ्यास भी साधकों को क्लेशों से मुक्त करता है। हम आशा करते हैं कि पाठक समाधि विषयक अनुभवों सहित ऋषि दयानन्द के वाक्यों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती और उनके आर्यसमाजी बनने की प्रेरणादायक घटना’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी आर्यसमाज के विख्यात संन्यासी हुए हैं। आपने अलीगढ़ में एक गुरुकुल का सचालन भी किया जिसमें पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी संस्कृत व्याकरण आदि पढ़ाते थे। इसी गुरुकुल में हमारे दो प्रमुख विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक एवं आचार्य भद्रसेन जी भी पढ़े थे। आर्यसमाजी बनने से पहले स्वामी जी नवीन वेदान्त मत के सन्यासी थे और उससे पूर्व शैवमत के अनुयायी थे। स्वामी जी की मूर्तिपूजा छूटने की कहानी भी मनोरंजक है। स्वामी जी शैवमत के अनुयायी थे और शिवमूर्ति को फूलों से नित्यप्रति सजाया करते थे। एक बार आपने देखा कि एक कुत्ता उस शिव मूर्ति का अपमान कर रहा है। इससे आपको बहुत दुःख हुआ। मन में कई प्रकार के प्रश्न व शंकायें उत्पन्न हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि मूर्तिपूजा पर से आपका विश्वास समाप्त हो गया। मूर्ति पूजा छूटने के बाद स्वामी जी का झुकाव नवीन वेदान्त की ओर हो गया। आपको फारसी भाषा का बहुत अच्छा ज्ञान था। स्वामी जी स्वयं भी हिन्दी मिश्रित उर्दू में पद्य रचना भी किया करते थे।

 स्वामी सर्वदानन्द जी का जन्म सन् 1855 ई. में पंजाब की धरती पर होशियारपुर जिले के बस्सी कलां ग्राम में पिता श्री गंगा बिशन जी के यहां एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। माता-पिता ने आपको चन्दूलाल नाम दिया था। आपके कुल में आपके पूर्वज आयुर्वैदिक और यूनानी पद्धति से चिकित्सा किया करते थे। अतः आपको भी अपने पिता व पितामह आदि से इन चिकित्सा पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त हुआ। इससे आप एक कुशल वैद्य व हकीम बन गये थे। मूर्तिपूजा छूटने और वेदान्ती बनने पर आपके मन में संन्यासी बनने का विचार आया। अतः आपने 32 वर्ष की आयु में सन् 1887 में एक वेदान्ती साधु से संन्यास की दीक्षा ली और चन्दूलाल से स्वामी सर्वदानन्द बन गये। आपके संन्यासी बनने का कारण यह बताया जाता है कि आपके पिता मृत्यु शय्या पर पड़े थे परन्तु उनके प्राण नहीं निकल रहे थे। आपने अपने पिता से इसका कारण पूछा तो वह बोले कि मेरी इच्छा थी कि मैं अपने जीवन में संन्यासी बन कर ईश्वर का भजन कीर्तन करते हुए ही मृत्यु का वरण करूं। मैं यह काम नहीं कर पाया, इसका मुझे पश्चाताप हो रहा है। इस पर चन्दूलाल वा स्वामी सर्वदानन्द जी ने उन्हें कहा कि आप शान्ति से प्राण त्याग कर दें। आपकी इच्छा को मैं संन्यासी बन कर पूरी करूंगा। 32 वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण करने के पीछे यही प्रमुख कारण था। संन्यास के समय आप विवाहित थे या नहीं, आपकी कोई सन्तान थी या नहीं, इसका विवरण नहीं मिलता।

 स्वामी जी आर्यसमाजी कैसे बने, इसकी कथा भी जानने योग्य है जिसे सुनकर व स्मरण कर उस समय के आर्यसमाजियों के प्रति हमारा शिर झुक जाता है। इस कथा को हमने आर्यसमाज में अनेकानेक बार अनेक विद्वानों से सुना है और इसे सुनकर हमेशा हमारा हृदय द्रवित होता रहा। प्रा. जिज्ञासु जी ने लिखा है कि ‘श्री स्वामी जी के वैदिक धर्मी बनने की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। जब नवीन वेदान्ती थे तो मस्ती में घूमते रहते थे। घुमक्कड़-फक्कड़ प्रकृति के थे ही। भ्रमण करते-करते आप चित्रकूट पहुंचे। सर्दी के दिन थे। यमुनातट पर नंगे पड़े रहते थे। उन्हीं दिनों आपको एक रोग चिपट गया। आपको छाती व कटि में दर्द रहने लगा। यह रोग अन्त तक उन्हें कष्ट देता रहा। स्वामी जी तपस्वी तो थे ही। भोजन मिल गया तो मिल गया, नहीं मिला तो नहीं मिला। 24-24 घण्टे अपने विचार में, ध्यान में मग्न रहते थे। इस अवस्था में आप रुग्ण हो गये।

 निकट के ग्राम के ठाकुर को जो स्वामी जी का भक्त था, स्वामी जी की रुग्णता की जानकारी मिली। उस क्षेत्र में वह अकेला आर्यसमाजी था। उसने आपकी चिकित्सा व सेवा-शुश्रूषा में कोई कमी न छोड़ी। ठाकुर की सेवा से आप कुछ ही दिन में रोग मुक्त हो गये। अब वहां से चलने का मन बनाया। अपने सेवक को मिलने के लिए बुलवाया। यह सन्देशा पाकर वह आया और एक रेशमी वस्त्र में लपेटकर एक ग्रन्थ भेंट करते हुए उसने कहा, ‘‘महाराज ! यह मेरी एक भेंट है। इसे स्वीकार कीजिये। इसे आदि से अन्त तक एक बार अवश्य पढ़ना।” आपने भक्त को वचन दिया कि इसे अवश्य पढूंगा। वहां से स्वामी जी गोरखपुर की ओर चल पड़ें।

 मार्ग में विचार आया कि देखें तो सही कि हमारे भक्त ने कौन-सी पुस्तक भेंट की है। वस्त्र को खोला तो देखते हैं कि यह महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश है। स्वामी जी ने इससे पूर्व इसका नाम तो सुन रखा था परन्तु इससे घोर घृणा करते थे। इसे छूना तक पाप मानते थे। अपने सेवक को वचन दे चुके थे कि इसे पढूंगा। वैसे भी विचार आ गया कि देखना तो चाहिये कि इसमें क्या लिखा है। नित्यप्रति इसे पढ़ने लगे। इसकी समाप्ति तक एक दिन भी ऐसा न गया जब इसका स्वाध्याय न किया हो। सत्यार्थप्रकाश का पाठ समाप्त करते-करते स्वामी सर्वदानन्द का जीवन ही बदल गया। अब वह क्या से क्या हो गये, इसे देखकर उनके परिचित लोग भी दंग थे। जो कल तक स्वयं को ब्रह्म समझता था अब वह महात्मा जीव बन गया था। स्वयं को ब्रह्म मानने वाले स्वामी जी अब एक ब्रह्म की उपासना का उपदेश देने लगे। सकल भ्रम संशय दूर हो गये। जैसे पक्के नवीन वेदान्ती थे अब वैसे ही दृढ़ आर्यसमाजी बन गए। महाशय राजपाल जी के इस कथन में कुछ भी अत्युक्ति नहीं है।”

स्वामी जी अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार का भी प्रचार करते थे। जब कभी कहीं व्याख्यान आदि देते थे तो अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार की चर्चा अवश्य करते थे। स्वामी जी जन्मना जाति-पांति के घोर विरोधी थे। हिन्दू समाज में दलितों के प्रति जो अन्याय, शोषण व दुव्र्यवहार किया जाता रहा है, उस पर आप रक्तरोदन किया करते थे। हमें इस बात का दुःख है कि आर्य विद्वानों व संन्यासियों की इस पीड़ा व इसे दूर करने के उपायों का समाज पर अपेक्षानुकूल प्रभाव नहीं पड़ा और यह सफल नहीं हुआ। स्वामी सर्वदानन्द जी क लेखों का एक संग्रह विश्व प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी ने संकलित व सम्पादत कर प्रकाशित किया था। उसके बाद भी कुछ संग्रह प्रकाशित होने का अनुमान है परन्तु इस समय सभी अप्राप्य है और उनका न तो किसी को ज्ञान है और न ही चिन्ता। स्वामी सर्वदानन्द जी की मृत्यु चैत्र माह के 28 वें दिवस संवंत् 1997 विक्रमी (सन् 1940) में हुई थी।

स्वामी जी का लिखा हुआ स्वाध्याय योग्य एक बहुत ही अच्छा ग्रन्थ **‘सन्मार्ग दर्शन’** है। सौभाग्य से यह ग्रन्थ इस समय उपलब्ध है। इस ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या 455 है जिसे भव्य रूप में आर्य प्रकाशक **‘श्री घूडमल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोन सिटी’** ने अगस्त, 2004 में प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक हैं स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी भी आर्यसमाज की एक महान हस्ती थे। आपने अनेक ग्रन्थों का पुनरुद्धार किया। आपने 18 पुराण पढ़े हुए थे। बाल्मीकि रामायण और महाभारत पर भी आपने स्वसम्पादित आर्य मान्यतानुकूल संस्करण प्रकाशित कराये। अनेक ग्रन्थों का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद कर उनका प्रकाशन कराया। हमारा सौभाग्य है कि स्वामी जी के जीवन काल में हमें उनका सत्संग करने सहित उनसे वार्तालाप करने के अनेक अवसर भी प्राप्त हुए थे। इसी के साथ हम इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**